कार्यक्रम राजधानी में चल रहे चार दिनी साहित्य उत्सव 'उन्मेष' का हुआ समापन, साहित्य और समाज पर मंथन, समारोह में विद्वानों ने रखे अपने-अपने विचार

नारी साहित्य ने खोले स्वतंत्रता के द्वार, नारीवाद के सही मायने सभी के प्रति समान दृष्टिकोण

भोपाल ■ राज न्यूज नेटवर्क

साहित्य और समाज से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विचार मंथन के साथ रविवार को शहर में चल रहे चार दिनी साहित्य उत्सव 'उन्मेष' का समापन हुआ। अंतिम दिवस भी वैचारिक सत्रों में भारत की विरासत, नारीवाद और साहित्य, साहित्य के मूल्य, आदिवासी कवि सम्मेलन सहित अन्य विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। समारोह का आयोजन साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा किया गया था। नारीवाद और साहित्य सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात लेखिका और प्रकाशक नमिता गोखले ने कहा कि सही मायने में नारीवाद का मतलब सभी के लिए समान दृष्टि होना है। सी मृणालिनी ने नारी साहित्य की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए कहा कि इससे नारी स्वतंत्रता के नए द्वार खोले हैं। लीना चंदोरकर ने कहा कि जिस दिन नारी अपने जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं ले सकेगी वह तभी आजाद होगी। प्रीति शिनॉय ने महिलाओं को दिए जाने वाले कम पैसों के भुगतान पर सवाल उठाते हुए कहा कि इसके चलते आर्थिक असमानता के बीच काम करना मुश्किल हो रहा है। सोनोर झा ने कहा कि इस असमानता को दूर करने की शुरुआत हमें अपने घरों से ही करनी होगी ।

समन्वय के बिंदुओं को भारतीय भाषाओं में खोजना होगा

दोपहर में नीलांबरी सभागार में 'भारतीय भाषाओं में प्रकाशन' विषय पर केन्द्रित विमर्श सत्र श्रीधर बालन की अध्यक्षता में हुआ। वहीं वक्ता के रूप में रमेश कुमार मित्तल, विजय कुमार धूपति, बीना बिस्वास, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक कर्नल युवराज मलिक, और प्रणव कुमार ने विचार रखे। श्रीधर बालन ने पुस्तक प्रेम , भारतीय भाषाओं के मध्य स बंध स्थापित करने और अनुवाद पर बल देते हुए कहा कि प्रकाशन जगत की अपनी चुनौतियां एवं विशेषताएं हैं। साथ ही लोगों को एक करने के लिए - एकता के सूत्रों व समन्वय के बिंदुओं को भाषा में ढूंढना और प्रस्तुत करना पड़ेगा। भाषा सभी से संवाद करने वाली होनी चाहिए। बीना बिस्वास ने प्रकाशन जगत के अर्थशास्त्र पर चर्चा की। विजय कुमार धूपति ने भीमबेटका का उदाहरण देते हुए कहा कि –मैंने भीमबेटका में हजारों वर्षों पूर्व की आदि भाषाओं के प्रकाशन को चित्र के रूप में देखा। प्रणव गुप्ता ने भारतीय प्रकाशन बाजार के बड़े स्वरूप पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि हम प्रकाशन क्षेत्र में विश्व के तीसरे बड़े देश हैं। चार हजार से अधिक प्रकाशन हैं और इस बाजार से दस मिलियन डॉलर का व्यवसाय वार्षिक होता है।